

सकारात्मक विचारों का संवाहक “हिन्दी साहित्य”

आचार्या - डॉ. पारुल सिंह
श्री कृष्ण प्रणामी आर्ट्स
कॉलेज दाहोद
चलभाष - 9428673109

साहित्य, समाज का प्रतिबिम्ब है समाज का मार्गदर्शक है, समाज का लेखा-जोखा है। किसी भी राष्ट्र या सभ्यता की जानकारी उसके साहित्य से प्राप्त होती है। साहित्य लोकजीवन का अभिन्न अंग है। किसी भी काल के साहित्य से उस समय की परिस्थितियों, जनमानस के रहन-सहन, खान-पान व अन्य गतिविधियों का पता चलता है। समाज साहित्य को प्रभावित करता है और साहित्य समाज पर प्रभाव डालता है। दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। साहित्य संस्कृत के ‘सहित’ शब्द से बना है। संस्कृत के विद्वानों के अनुसार साहित्य का अर्थ है-

‘हितेन सह सहित तस्य भवः’ अर्थात् कल्याणकारी भाव। कहा जा सकता है कि साहित्य लोक कल्याण के लिए ही सृजित किया जाता है। साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन करना मात्र नहीं है, अपितु इसका उद्देश्य समाज का मार्गदर्शन करना भी है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में-

‘केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए
इसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।’

प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता अति समृद्ध थी। हमारी सभ्यता इतनी उन्नत थी कि हम आज भी उस पर गर्व करते हैं। भारतीय संस्कृत साहित्य ऋग्वेद से प्रारंभ होता है। महर्षि व्यास और वाल्मीकि जैसे पौराणिक ऋषियों ने महाभारत एवं रामायण जैसे महाकाव्यों की रचना की। भास कालिदास एवं अन्य कवियों ने संस्कृत में नाटक लिखे। भक्त साहित्य में अवधी में गोस्वामी तुलसीदास, ब्रज में सूरदास, मारवाडी में मीराबाई, खड़ी बोली में कबीर, रसखान, मैथिली में विद्यापति आदि प्रमुख हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास पर दृष्टि डालें तो देख सकते हैं कि हमारे राष्ट्र और समाज को समृद्ध बनाने में साहित्यकारों को योगदान महत्त्वपूर्ण है। इसलिए कहा गया है कि जिस राष्ट्र का साहित्य जितना समृद्ध होगा वह राष्ट्र और उसका समाज उतना अधिक समृद्ध होगा।

मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। विचारों ने साहित्य को जन्म दिया तथा साहित्य ने मानव की विचारधारा को गतिशीलता प्रदान की, उसे सभ्य बनाने का कार्य किया। मानव की विचारधारा में परिवर्तन लाने का कार्य साहित्य द्वारा ही किया जा सकता है। इतिहास में आज तक जितने भी परिवर्तन आए वे सब साहित्य के माध्यम से ही आए, साहित्यकार समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियों, विकृतियों, अभावों, विषमताओं, असमानताओं आदि के बारे में लिखता है। इनके प्रति जनमानस को जागरूक करने का कार्य करता है। साहित्य जनहित के लिए होता है। जब सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों का पतन होने लगता है तो साहित्य जनमानस का मार्गदर्शन करता है।

भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल कहा जाता है। इस काल में गोस्वामी तुलसीदास ने ‘रामचरितमानस’ की रचना की। सूरदास ने ‘सुरसागर’ आदि ग्रंथों की रचना निराशा में डूबे जनमानस के भीतर श्री राम, श्री कृष्ण जैसे अवतारी नायकों के जीवन चरित्र का वर्णन कर आशा की ओर अर्थात् अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का अपना सार्थक प्रयास किया। दुःखी, पीड़ित, दिशाहीन जनमानस में इन्हीं कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नई सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया। कवि बिहारी द्वारा भोग-विलास में लिप्त जयपुर के राजा जयसिंह को केवल एक दोहे के माध्यम से अपना कर्तव्य बोध करवाना कोई

‘मीरा मगन भई हरि के गुण गाय।’

साँप पिटारा राणा भेज्यो, मीराँ हाथ दियो जाया
 न्याह धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय
 जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाया साधारण बात नहीं थी। मीराबाई के पदों में कृष्ण को पाने के लिए रची गई पंक्तियाँ आज भी कृष्ण भक्तों को भगवान कृष्ण के अधिक समीप ले जाती हैं-

हाथ धोय जब पीबण लागी, हो गई अमर अँचाया
 सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीराँ सुलाया
 साँझ भई मीराँ सोवण लागी, मानो फूल बिछाया
 मीराँ के प्रभु सदा सहाई राखे बिघन हटाय
 भजन भाव में मस्त डोलती गिरधर पर बलि जाया।।२

भक्त मीरा की तरह ईश्वर पर आस्था रखने वाले मनुष्य के हर विघ्न को प्रभु हटा देंगे। यह सकारात्मक विचार ही मनुष्य के भीतर की नकारात्मक सोच को खत्म कर देता है। आत्मा सोच और परमात्मा के बीच के इस अटूट संबंध को कोई नकार नहीं सकता। मीरा का विष पान करना और कृष्ण का उन्हें बचाना इस बात का प्रमाण है कि जो ईश्वर की सच्ची भक्ति करता है उसे वे सदा अपना रक्षण देते हैं। ईश्वर पर अटूट विश्वास मनुष्य को हर विपदा में सम्बल की तरह साथ देता है। मध्यकालीन कवि कबीर की साखी में वे यह संदेश देते हैं- कि

“जहाँ दया तहाँ धर्म है जहाँ लोभ तहाँ पाप,
 जहाँ क्रोध तह काल है जहाँ छिमा तहाँ आप।।३

अर्थात् दया ही सच्चा धर्म है और लालच पाप है, क्रोध से सर्वनाश होता है, जहाँ क्षमा है वहाँ ईश्वर का वास होता है। कबीर ने जनमानस को मानवता का संदेश दिया।

“दुर्बल कौ न सताइये, जाकी मोटी हाय,
 बिना जीव की स्वाँस से, लोह भसम हो हैब जाया।।४

कबीर ने यहाँ सबल व्यक्तियों को यह संदेश दिया है कि वे कभी भी दुर्बल व्यक्ति को प्रताड़ित न करें। क्योंकि दुर्बल की हाय या शाप बहुत प्रभावशाली होता है, जैसे मरे हुए जानवर की खाल को जलाने से लोहा तक पिघल जाता है। कबीर आशावादी हैं उन्हें अपने प्रभु पर पूर्ण विश्वास है, यह विश्वास ही उन्हें विकट परिस्थिति में भी निराशा से बचाता है वे इसीलिए पद में कहते हैं-

“हम न मरें मरि है संसारा।
 हम कूँ मिल्या जियावन हारा।।
 अब न मरौं मरने मन माना, तेई मुए जिनि राम न जाना।
 साकत मरें संत जन जीवैं भरि भरि राम रसाइन पीवै।
 हरि मरि हैं तौ हम हूँ मरि हैं, हरि न मरें हम काहैं कु मरि हैं
 कहै कबीर मन मनहि मिलावा, अमर भये सुख सागर पावा।।५

आत्मा परमात्मा का अंश है, वह अजर-अमर, जीवन मरण की बाधाओं से मुक्त है जो यह बात जानते हैं, वह सुखी रहते हैं और जो नहीं जानते वह मृत्यु के भय से बार-बार मरते रहते हैं। भक्त पर ईश्वर की कृपा हो गई है इसलिए वह कहता है समाज में तभी खुशहाली और सकारात्मक ऊर्जा होगी जब कोई किसी को कड़वे वचन न बोलकर सुख देने वाले मीठे वचन बोले तुलसीदास ने अपनी ‘दोहावली’ में इस सम्बन्ध में लिखा है-

“तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओरा।
 बसी करन रह मंत्र है, परिहरु बचन कठोरा।।६

रहीम अपने दोहे में यह संदेश देते हैं कि जीवन में सुख-दुःख, हित-अनहित थोड़े समय ही रहता है मनुष्य को हर स्थिति में धैर्य रखना चाहिए जैसे-

“रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होया।
 हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोइ।।७

वस्तुतः विपत्ति ही भली है, इसे झेलते हुए सुख के दिनों की प्रतीक्षा करनी चाहिए। विपत्ति हमेशा के लिए तो नहीं रहेगी यह थोड़े दिन की महेमान होती है किन्तु तब तक यह तो पता चल जाता है कि जगत में कौन-कौन हितकारी है अथवा अहितकारी है। महर्षि व्यास द्वारा संस्कृत भाषा में ‘महाभारत’ की रचना की गई। धर्म के लिए पाण्डवों द्वारा किए गए महाभारत के युद्ध में अधर्म का साथ देने वाले सभी महारथियों का विनाश हो गया, इस महाकाव्य ने जगत को अधर्म का साथ न देने का संदेश दिया है। इस महान ग्रंथ से पाठक यह शिक्षा ग्रहण करते हैं कि चाहे कितने भी संघर्ष जीवन में आ जाए हमें कभी भी धर्म का साथ छोड़कर अधर्म के मार्ग को नहीं अपनाना चाहिए। अधर्म के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति चाहे कितना भी शक्तिशाली हो उसका अंत सदैव भयावह होता है।

अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’ जी हिन्दी साहित्य के सार्वभौम कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। सहृदयता एवं कवित्व की दृष्टि से भी वे बेजोड़ हैं। इनका सम्पूर्ण काव्य लोक-कल्याण की भावना से आपूरित है। ‘कर्मवीर’ शीर्षक कविता में वे कर्मवीरों को संबोधित करते हुए कहते हैं-

“देखकर बाधा विविध बहु विघ्न घबराते नहीं,
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते वहीं॥
काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं॥
हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिलें फूले फलै॥
चिल चिलाती धूप को जो, चाँदनी देवे बना।
काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना॥
काम को आरम्भ करके यों नहीं जो छोड़ते।
सामना करके नहीं जो भूलकर मुँह मोड़ते॥” 8

यहाँ कवि ने उन कर्मवीरों का गुणगान किया है जो विपरीत परिस्थिति में भी मुश्किलों का सामना डटकर करते हैं। ऐसे वीरों का बखान हर काल में होता आया है चाहे वह सतयुग हो या कलयुग।

मैथिलीशरण गुप्त की कविता में सर्वत्र देश प्रेम एवं भारतीय संस्कृति की अमिट छाप दृष्टिगोचर है। ‘आशा’ शीर्षक कविता में वे पाठकों को यही संदेश देते हैं कि जीवन में जब कभी चारों ओर निराशा छा जाए तब भी आशा रूपी सकारात्मक विचार को कभी नहीं छोड़ना चाहिए जैसे-

“बीती नहीं यद्यपि अभी तक है निराशा की निशा
है किन्तु आशा भी कि होगी दीप्ति फिर प्राची दिशा।
महिमा तुम्हारी ही जगत में धन्य आशे ! धन है,
देखा नहीं कोई कहीं अवलम्ब तुम साधन्य है।
आशे, तुम्हारे ही भरोसे जी रहे हम सभी।
सब कुछ गया पर हाय रे ? तुमको न छोड़ेंगे कभी॥” 9

आगे वे अपना सर्वस्व लोककल्याण पर न्यौछावर करने वाले साहसी वीरों की निःस्वार्थ सेवा के विषय में लिखते हैं-

“बनकर स्वयं सेवक सभी के लो उचित हित कर रहे।
होकर निछावर देश पर जो जाति पर हैं मर रहे॥” 10

मनुष्य का शरीर नाशवान है, जन्म के साथ ही उसकी मृत्यु का समय काल निर्धारित कर देता है। कवि मैथिलीशरण जीवन-मरण के इस चक्र से न डरकर पाठकों को निर्भीक होने की बात अपनी ‘‘मनुष्यता’’ शीर्षक कविता में कहते हैं-

“विचार लो कि मन्त्र्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करे सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए।

मरा नहीं वही कि जो जिया न आप के लिए।
यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप-आप हर चरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥11

इस कविता में कवि ने उसी मनुष्य को महान बताया है जो मानवता के पथ चलकर परमार्थ के लिए प्रवृत्त होता है उसी उदार की माँ सरस्वती एवं माँ धरा प्रशंसा करती हैं। जिस प्रकार जनकल्याण के लिए दधीचि मुनि ने अपना अस्थिजाल का दान दे दिया था, उशीनर क्षितीश ने अपना माँस दान दे दिया। उसी प्रकार इतिहास उसका साक्षी है कि जिस मनुष्य ने स्व का भाव छोड़ कर परार्थ के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया समस्त सृष्टि में वे महाविभूतियाँ सदा ही याद की जाती हैं, दोहराई जाती हैं। मनुष्य को आगे वे दिशा निर्देश करते हुए कहते हैं-

“चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति विघ्न जो पड़े, उन्हें धकेलते हुए।
घटे न हेल मेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी।
अतर्क एक पन्थ के सतर्क पान्थ हों सभी।
तभी समर्थ भाव है कि तारता हुआ तरे,
कही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे॥”12

जयशंकर प्रसाद भारतीय संस्कृति के अनन्य पुजारी थे। उनके मन-मानस में देश-प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। प्रसाद जी ने इतिहास पुराण में बिखरी हुई कथावस्तु को कल्पना एवं भावुकता के द्वारा नई अभिव्यंजना शैली में व्यक्त किया। छायावाद के यह सबसे उन्नत चोटी पर प्रतिष्ठित हुए। कवि को भारतीय सभ्यता एवं इतिहास पर गर्व है। अपनी ‘भारतवर्ष’ शीर्षक कविता में वे अपने को भारतीय होने पर गौरव महसूस करते हैं। कविता में अपनी परंपरा को याद करते हुए वे कहते हैं कि-

“चरित के पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा सम्पन्न,
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्ना।
हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव,
वही है रक्त, वही है साहस, वैसा ज्ञान,
वही है शान्ति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्यसन्तान।
जियें तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे यह हर्ष
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष॥”13

हिन्दी के कवि शिवमंगल सिंह ‘सुमन’ की कविता ‘परिचय’ शीर्षक में आशा, उमंग, प्रेम एवं कर्तव्य की मंदाकिनी प्रवाहित है। उनके स्वयं का जीवन दर्शन मुखरित है, हर्ष, प्रेरणा एवं राग-विराग का संगम है। इस कविता में कवि पाठकों के अपने जीवन से संदेश देते हैं कि मेरा जीवन एक झरने की भाँति सदैव बहता रहा है जीवन में जो उत्थान पतन आए उसने मुझे और प्रबल वेग से बढ़ने के लिए सक्षम बना दिया। किस्मत ने मेरी कठिन परीक्षा ली किन्तु मेरी सहनशीलता पर हिमधर कर हृदय पसीज उठा। जीवन तो सदा गतिशील होता है जैसे सुख सदा नहीं रहता जैसे ही दुःख की समयाविधि भी अधिक समय तक नहीं रहती। मनुष्य को दुःख से घबराना नहीं चाहिए। जिस प्रकार सूर्योदय के बाद सूर्यास्त होता है तब चन्द्रदेव अपना प्रकाश फैलाकर अंधीयारा दूर करते हैं वे कभी भी अपने कर्तव्य से नहीं पीछे हटते। प्रकृति हमें यही सीखाती है कि हमें कभी भी निराश नहीं होना चाहिए बस अपने कर्तव्य का पालन और दुःख के समय आशा और साहस के साथ गतिशील रहना चाहिए। इसी आशा के संदर्भ में कहते हैं-

“जीवन के कण-कण में गति है, जीवन के अणु-अणु में गति है,
मानव जीवन के चिर साथी सुख-दुख टिकते कभी नहीं॥”14

कहा जा सकता है कि हर युग में कवियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से तत्कालीन समाज का मार्गदर्शन किया है। हिन्दी साहित्य ने हर युग में समाज को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान की है। साथ ही विकट परिस्थिति में समाज के लोगों को अपने कर्तव्य बोध का संदेश दिया है। मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है यह प्रेरणा हिन्दी साहित्य ने समाज को दी है। कर्मवीरों की वीरता एवं उनके शौर्य का गुणगान कर कवियों ने उस महान उद्देश्य को लेकर चलने वाले योद्धाओं को नमन किया है। हिन्दी साहित्य में

ऐसे कई कवि हैं जिन्होंने समयानुकूल कविता लिखकर अपने सच्चे कवि धर्म को निभाया है। इसीलिए हर युग में कवियों को सदा सम्मान प्राप्त हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत-भारती श्री मैथिलीशरण गुप्त, प्रकाशक-साहित्य सदन चिरगाँव (झाँसी)
पृ.सं.171
2. मीराबाई की पदावली, प्रकाशक-हिन्दी-साहित्य सम्मेलन प्रयाग पृ.सं. 112
3. काव्य सौरभ, प्रकाशक-विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा पृ.सं. 25
4. वही पृ.सं. 25
5. वही पृ.सं. 28
6. वही पृ.सं.43
7. वही पृ.सं.68
8. वही पृ.सं. 116
9. वही पृ.सं.123
10. वही पृ.सं. 124
11. वही पृ.सं. 127
12. वही पृ.सं. 128
13. वही पृ.सं. 132-133
14. वही पृ.सं. 194